दिनांक :- 19-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्राचीन इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म

पुद्गल से तात्पर्य उस तत्व से है जिसका संयोग तथा विभाजन किया जा सके! इसका सबसे छोटा भाग 'अणु' कहा जाता है! अणुओ में ही जीव निवास करते है। समस्त भौतिक पदार्थ अणुओं के ही संयोग से निर्मित होता है। स्पर्श, रस, गन्ध तथा वर्ण ये पुद्गल के गुण है। जो समस्त पदार्थों मे दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner

जैन दर्शन का मानना है कि संसार में आत्मा है जो मात्र पशुओं तथा पेड़ पौधों में ही नहीं होती वरन् पहाड़ों झरने और अन्य प्राकृतिक तेज विद्यमान रहता है। यह सर्वज्ञता तथा शक्तिमान होता है।

आत्मा में एक प्रकार का प्राकृतिक जब कर्मपुद्गल के आवरण से ढक जाता है तो इसी की वजह से आत्मा में बदलाव आ जाता है।

विभिन्न क्रियाओं के कारण कर्म आत्मा से जुड़ जाता है और कार्यों से बुरे प्रकार का कर्म पैदा होता है। अतः आत्मा भी बुरा हो जाता है।

कर्म के कारण ही पुनर्जन्म में विश्वास रखता है।

जैन दर्शन के अनुसार जब कर्म पदार्थ आत्मा में उतर जाता है तब यह कर्म की आठ प्रकृतियों में रूपांतरित हो जाता है। इस तरह जैन धर्म कर्म तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखता है।

Scanned with CamScanner

जैन दर्शन के अनुसार जब कर्म पदार्थ जब आत्मा में यह कर्म घुल-मिल जाता है तो आत्मा में एक प्रकार का रंग उत्पन्न करता है, जो साधारण आँख से दिखाई नहीं देता है। इस रंग को लेश्य (Leshya) कहा जाता है। यह लेश्य छः प्रकार का होता है।

① काला ② नीला ③ धूसर ④ पीला
⑤ लाल ⑥ सफेद

किसी भी व्यक्ति का लेश्य उसके चरित्र का सूचक होता है। उनमें से पहले तीन लेश्यों का संबंध बुरे चरित्र से है और अंतिम तीन का संबंध अच्छे चरित्र से है।

उपनिषद के विपरीत जैन धर्म की मान्यता है कि आत्मा की शुद्धि लम्बे समय तक उपवास, अहिंसा और इंद्रियनिग्रह द्वारा संभव है।

जैन धर्म में सल्लेखन से तात्पर्य है उपवास द्वारा प्राण त्याग करना

जैन दर्शन के सिद्धान्त को अनेकान्तवाद, स्याद्वाद,

Scanned with CamScanner

सप्तभंगी सिद्धान्त, सप्रतिघ सिद्धान्त अथवा नयवाद के नाम से जाना जाता है।

अनेकान्तवाद - यह सप्तभंगी न्याय के नाम से जाना जाता है। इसका मानना है कि सत्य एक है और एक से अधिक है, स्थिर है और परिवर्तनशील है।

स्याद्वाद - स्याद्वाद अनेकान्तवाद से ही जुड़ा है तथा ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त है। इसके अनुसार सांसारिक वस्तुओं के विषय में हमारे सभी निर्णय सापेक्ष एवं सीमित होते हैं। न तो हम किसी को पूर्ण रूपेण स्वीकार कर सकते हैं और न अस्वीकार। अतः हमें प्रत्येक निर्णय के पूर्व स्यात (शायद) लगाना चाहिए।

जैन सिद्धान्त - जैन सिद्धान्त के अनुसार मोक्ष की प्राप्ति के लिए त्रिरत्न का अनुसरण आवश्यक माना गया है।

(1) सम्यक ज्ञान - जैन धर्म तथा उसके सिद्धान्तों का

ज्ञान ही सम्यक ज्ञान है जो पांच प्रकार का होता है —

(i) मति (इन्द्रिय जनित ज्ञान) (ii) श्रुतिः श्रवण से प्राप्त ज्ञान

(iii) अवधिः- दिव्य ज्ञान (iv) मनः पर्यय दूसरे के मन की बात जान लेना

(v) कैवल्य ज्ञानः सर्वोच्च ज्ञान, पूर्ण ज्ञान

(2) सम्यक चरित्र : जो कुछ जाना जा चुका है और सत्य माना जा चुका है उसे कार्यरूप में परणित करना। इसके अंतर्गत भिक्षुओं के लिये पांच महाव्रत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थों के लिये कम कठोर उपरोक्त पाँच अणुव्रत का पालन सच्चरित्रतापूर्वक करना आवश्यक है।

(3) सम्यक दर्शनः- जैन तीर्थंकरों तथा उनके उपदेशों में दृढ़ आस्था तथा श्रद्धा रखना ही सम्यक दर्शन है। इसके आठ अंग हैं।

(1) संदेह से दूर रहना (2) सांसारिक सुखों की इच्छा का त्याग

(3) शरीर के मोह राग से दूर रहना।

(4) असत्य मार्ग पर न चलना।

Scanned with CamScanner

(6) अधूरे अविश्वास से अविचलित न होना
(6) सही विश्वासों पर अटल रहना
(7) सबके प्रति प्रेम भाव रखना
(8) जैन सिद्धान्तों को सर्वोच्च समझना

उपरोक्त त्रिरत्नों का अनुसरण करने से जीव की ओर कर्म का बहाव रुक जाता है जिस संवर कहा जाता है। फिर पहले से जीवों में व्याप्त कर्म जब समाप्त होता है तो उस अवस्था को 'निर्जरा' कहा जाता है। जब जीव से कर्म का अवशेष पूरी तरह आजाद हो जाता है तो वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। फिर जीव अनन्त चतुष्टय की प्राप्ति कर लेता है। ये चार प्रकार के हैं।

(1) अनन्त ज्ञान (2) अनन्त दर्शन
(3) अनन्त वीर्य (4) अनन्त सुख

इसके अतिरिक्त जैन सात धर्म सात शील व्रत

पाँच समिति (सतर्कता) तीन गुप्ती (संयम), दस लक्षण धर्म और 22 परिसा की परिकल्पना करता है।

जैन धर्म मे 18 प्रकार के पापो की परिकल्पना की गई है।

हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म के विपरित जैन धर्म मे सिर्फ संघ के सदस्यो के लिये कैवल्य का विधान है। सामान्य गृहस्थो के लिये नही

जैन धर्म के अनुसार सन्यासी या भिक्षु के जीवन मे प्रवेश करने के पूर्व किसी व्यक्ति को गृहस्थ जीवन की ग्यारह कोटियो से गुजरना पड़ता है। जैन मत मे मनुष्य की तीन श्रेणियाँ बताई गई है - (1) आव्रती (2) अणुव्रती (3) सर्वव्रती

जैन साधुओ के लिये कठिन एंव कठोर नियम आचरांग सूत्र मे निहित है। दिगम्बर साधु - क्षुल्लक, ऐल्लक तथा निर्ग्रंथ कहलाते थे। तथा श्वेतांबर यति, साधु और आचार्य कहलाते थे। सामाजिक दृष्टि से जैन धर्म जाति व्यवस्था पर बहुत कठोर आक्रमण नही करता है।